एनी बेसेन्ट के अनुसार शिक्षा के प्रमुख उददेश्य

ब्रजकिशोर द्विवेदी

सहायक अध्यापक

इंटर मीडिएट कॉलेज हथिगवां प्रतापगढ़

शोध सार

एक शिक्षाविद् के रूप में, श्रीमती एनी बेसेंट नेसाधारण जीवन और उच्च विचार पर अपने संपादन का निर्माण किया। एनी बेसेंट ने दृढ़ता से महसूस किया कि शिक्षा के पश्चिमी मोड से भारतीय संस्कृति की महानता डूब रही है। श्रीमती एनी बेसेन्ट शिक्षा को जीवन के तात्कालिक एवं अन्तिम दोनों ही प्रकार के लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रमुख साधन मानती हैं। इनके मतानुसार साध्य के साथ–साथ साधन भी नैतिक रूप से पुष्ट होने चाहिए। अगर साधन ठीक है तो साध्य की प्राप्ति निश्चित ही होगी। साधन को कारण और साध्य को कार्य बताते हुए इन्होंने स्पष्ट किया है कि अगर कारण स्वरूप शिक्षा उचित एवं पर्याप्त होगी तो साध्य की प्राप्ति अवश्यंभावी है। श्रीमती बेसेन्ट ने अपने शिक्षा दर्शन के आधार पर शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्तों के निर्माण का भी प्रयास किया है तथा शिक्षा के विभिन्न अंगों पर अपने ढंग से विचार भी प्रस्तुत किये हैं जिनको संक्षेप में अग्ररूप में प्रस्तुत किया जा सकता है:– प्रस्तुत शोध पत्र मेंन केवल व्यक्तियों के बीच उत्कृष्टता लाने में बल्कि शिक्षा के संज्ञानात्मक और गैर–संज्ञानात्मक पहलुओं के बीच संभावित अंतर को प्रकट करने के लिए अध्ययन को कई बिंदुओं से देखने और समझने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्दरूशिक्षा के प्रमुख उददेश्य,भारतीय संस्कृति, शिक्षा दर्शन, शिक्षाविद, साधन

प्रस्तावना

शिक्षा केवल मन को प्रशिक्षित करने का विषय नहीं है और न केवल ज्ञान प्राप्त करना, तथ्यों को एकत्र करना और सहसंबंधित करना है, बल्कि यह संपूर्ण रूप से जीवन शैली के महत्व को देखना है। श्रीमती बेसेन्ट ने यह भी प्रचारित किया कि शिक्षा का कार्य मानव को बनाना है जो एकीकृत हैं और इसलिए बुद्धिमान है। श्रीमती एनी बेसेंट के अनुसार शिक्षा को स्थायी मूल्यों की खोज करने में मदद करनी चाहिए ताकि लोग केवल नारे को न दोहराएं उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक और सामाजिक बाधाओं को तोड़ने में मदद करनी चाहिए। उन्होंने यह भी जोर देकर कहा कि लड़कियों को अधिक गहन और व्यापक शिक्षा के लिए व्यक्तिगत प्रोत्साहन की आवश्यकता थी, यह विश्वास करते हुए कि वे भारत का नेतृत्व करेंगे। श्रीमती एनी बेसेन्ट ने मैकाले की शिक्षा पद्धति के निहित मन्तव्यों का सही आंकलन करते हुए मैकाले द्वारा

प्रचलित शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन किया। उन्होंने भारतीय धर्म, संस्कृति, सदाचार तथा जीवन के शाश्वत मूल्यों की शिक्षा पर आधुनिक भारतीय शिक्षा का राष्ट्र–हित के अनुरूप सौध निर्मित किया तथा भारतीय युवकों एवं युवतियों के लिए सर्वांगीण शिक्षा के लिए अपेक्षित व्यवस्था की अवधारणा क्रियात्मक रूप से प्रस्तुत की। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा द्वारा शिक्षार्थी की अन्तर्निहित सम्भावनाओं को सात्विक परिवेश में प्रस्फुटित एवं विकसित किया जाना चाहिए। श्रीमती बेसेन्ट के भावानुसार शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक अनुशासन, त्याग, सादगी, सदाचार, कर्मठता निर्भीकता आदि का बीजारोपण एवं उनका विकास होना चाहिए, नौकरी प्राप्त करना मात्र नहीं। प्राचीन भारत में किसी भी व्यक्ति के जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति माना जाता था। अतः उसी के अनुरूप शिक्षा का उद्देश्य– 'सा विद्या विमुक्तये' था। जिसका तात्पर्य था सच्ची शिक्षा वही है जो मोक्ष की प्राप्ति कराये।

श्रीमती एनी बेसेन्ट की शिक्षा योजना

श्रीमती एनी बेसेन्ट ने अपनी शिक्षा योजना के अनुरूप विभिन्न शिक्षा सिद्धान्तों के समबं में अपने लेखों व व्याख्यानों के माध्यम से जो स्फुट विचार प्रस्तुत किये हैं उनके वैज्ञानिक आधारों को भी प्रमाणित करने का प्रयास किया है। जैसे आज के शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार बालक के विकास की विभिन्न अवस्थानुसार शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। बालक की रूचि व क्षमतानुसार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विकास के सिद्धान्त के अनुसार बालक के विकास की संभावनाओं को जागृत करना चाहिए आदि। इसी प्रकार श्रीमती बेसेन्ट ने भी आयु एवं विकास के स्तरानुरूप मुख्य रूप में शिक्षा के चार स्तम्भ इंगित किए है यथा प्राकृतिक, वैज्ञानिक, सामाजिक व आध्यात्मिक।

peer reviewed

16 नवम्बर 1893 में भारत आने के बाद उनके द्वारा सबसे पहले इस बात की आवश्यकता का अनुभव किया गया कि भारत के शिक्षा क्षेत्र में आमूल पुनर्गठन व सुधार की (प्राथमिकता के महत्व के साथ) आवश्यकता है। यह कैसे हो ? इसके लिए उनके द्वारा पुनर्गठन व सुधार हेतु भारतवर्ष के प्राचीन आदर्श व इतिहास तथा धर्म संस्कृति का गहन अध्ययन किया गया। किसी अन्य कारण से होने वाले अन्तरों के महत्व को भी स्वीकार किया है और तद्नुसार इसमें हेरफेर की छूट प्रदान की है। प्रातःकालीन मुख्य जलपान काल के बाद (जो विद्यालय की ओर से ही यथा सम्भव सुलभ होना चाहिए) का समय विद्यार्थियों के लिए पूर्णतया विश्राम के लिए निर्धारित होना चाहिए उसमें छात्र को किसी भी प्रकार का बौद्धिक कार्य करने दिया जाय। श्रीमती बेसेन्ट का मानना है कि प्रतिदिन शिक्षण से पूर्व एवं शिक्षणोपरान्त छोटी–सी ईश प्रार्थना विद्यार्थियों से अवश्य करायी जाय (जबकि उस समय राजभक्ति से जुड़े अंग्रेजी विद्यालयों में स्थान स्थान पर लांगलिब द क्वीन का अंग्रेजी राष्ट्रगान ही गाया जाता था या ईसा मसीह के गुणगान से जुड़े अंग्रेजी गाने गाए जाते थे।

शिक्षा और पाठयक्रम के सम्बन्ध में एनी बेसेन्ट के द्वारा व्यक्त किये गये विचार

शिक्षा और पाठयक्रम के सम्बन्ध में एनी बेसेन्ट के द्वारा व्यक्त किये गये विचार कुछ प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित थे। जैसे–उनका मत था कि चूँकि सभी बालक समान नहीं होतें अतः सबके लिये एक समान पाठयक्रम लागू नहीं होना चाहिए। अपितु, पाठयक्रम का निर्धारण बालकों की रूचि, वैयक्तित, सामाजिक एवं राष्ट्रीय आवश्यकता एवं क्षमता के अनुसार निर्धारित की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त भारतीयों की निर्धनता, राष्ट्रीय स्थिति एवं आवश्यकता को देखकर उन्होंने कृषि, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, तकनीकी कौशल आदि की शिक्षा को भी पाठयक्रम के सामान्य विषयों के समानान्तर सुनियोजित किया। प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा तथा स्त्रियों की शिक्षा में भी वे उपयोगी कौशल एवं घरेलू विषयों का ज्ञान प्रदान किए जाने की आवश्यकता पर बल देती थीं।

अध्ययन एवं मानसिक एवं मानसिक उन्नयन की दृष्टि से श्रीमती एनी बेसेन्ट ने जन्म से लेकर इक्कीस वर्ष तक की अवस्था को निम्नलिखित तीन स्वाभाविक कालों में विभक्त किया है–

प्रथम काल –जन्म से सात वर्ष

द्वितीय काल – सात से चौदह वर्ष

तृतीय काल – चौदह से इक्कीस वर्ष

peer reviewed

प्रथम काल–जन्म से सात वर्ष

श्रीमती एनी बेसेन्ट द्वारा इस काल में बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा के रूप और विषय भेद के आधार पर इस काल को पुनः दो उप कालों में विभक्त किया गया है–

अ. 1 से 5 वर्ष तक

उनके अनुसार इस अवस्था के बच्चों को गृह–शिक्षा (घर के भीतर ही) शिक्षा दी जानी चाहिए। इसके लिए माता–पिता को बाल–मनोविज्ञान, शिशु–शिक्षा पद्धतियों (किन्डर गार्टेन व मान्टेसरी) का सामान्य ज्ञान होना चाहिए। यदि संभव हो तो प्रारभिक शिक्षा हेतु ढाई से पाँच वर्ष के बच्चों को नर्सरी स्कूल में भी भेजा जा सकता है। इस अवस्था की प्रमुख विशेषता शारीरिक विकास का मार्ग प्रशस्त करना हैं अतः गरीब व असहाय लोगों के लिए बच्चों के जन्म से पूर्व व जन्म के बाद की शिक्षा के लिए जच्चा व बाल केन्द्र खोले जायं। इस अवस्था में बालकों में अच्छी आदतों की नियमितता और दृढ़ता को विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। शिशु अवस्था में घुटने के बल चलने वाले बालकों के आसपास रंग–बिरंगी वस्तुओं का आकर्षण प्रसतुत किया जाना चाहिए जिससे उनमें उन वस्तुओं को जानने की उत्सुकता पैदा

हो और उसे प्राप्त करने के लिए प्रयास करें। इससे बालाकों के विभिन्न अंगों के विकास के साथ–साथ उनका मानसिक विकास भी होगा। उसे अपने पैरों पर चलने के लिए बाध्य न किया जाए और न ही चलने में उसकी सहायता की जाय, बल्कि उसे अपने ही प्रयत्नों द्वारा चलने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

ब. 5 से 7 वर्ष का समय

श्रीमती एनी बेसेन्ट ने इस स्तर की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहा है। जिसमें कक्षा एक की दो उपकक्षायें हों–(अ) तथा (ब)।खेल पद्धति इसकी प्रमुख शिक्षण विधि हो। इसके अतिरिक्त कहानी, अभिनय, कविता पाठ आदि शिक्षण विधियों का भी प्रयोग किया जाये। बालकों में हाथ से वस्तुये बनाने का अभ्यास कराकर हस्त कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। स्कूल के कमरे अनेक आकर्षक वस्तुओं से सजे हों, जिनको देखकर बच्चों के मन में उन्हें जानने व समझने की जिज्ञासा उत्पन्न हो सके। इस प्रकार बालकों में चित्रांकन की रचनात्मक प्रवृत्ति को भी बढ़ावा मिलता रहेगा तथा बुद्धि भी विकसित होती रहेगी। इस अवस्था में बालक अनुकरण द्वारा अधिक सीखते हैं। अतः अध्यापक बालकों में अच्छी आदतों के निर्माण में इस विधि का प्रयोग करें।

यह अनुभव किया गया है कि अगर बच्चों को कटे हुए अक्षर दिये जायं और उनसे उन अक्षरों पर अनेकों बार अंगुली फेरने को कहा जाय तो इससे बालकों को अक्षर लिखने में आसानी हो जाती है और कुछ अभ्यास उपरान्त वे अक्षर बनाने में कुशल हो जाते हैं। बालकों को पढ़ना सिखाने के लिए सर्वप्रथम छोटे–छोटे संज्ञावाचक शब्द चित्र के माध्यम से सिखाए जाने चाहिए। तत्पश्चात् अध्यापक द्वारा शब्द बोलने पर बालक उस शब्द को चित्र से सम्बन्ध स्थापित कर पहचान .लेगा। शब्द और चित्र का अक्षर ज्ञान लकड़ी के गुटकों के माध्यम से भी कराया जा सकता है।

द्वितीय काल– 7 से 14 वर्ष

श्रीमती एनी बेसेन्ट द्वारा प्रथम काल की तरह शिक्षाा के इस काल को भी दो उपकालों में विभक्त किया गया है–

अ. 7 से 10 वर्ष तक समय

श्रीमती एनी बेसेन्ट ने शिक्षा के इस स्तर को निम्न माध्यामिक स्तर की संज्ञा दी है। इस अवस्था में कक्षा दो, तीन व चार का शिक्षण प्रदान किया जाये। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत शारीरिक स्वच्छता, शारीरिक मूल्य, आत्मनियंत्रण व सद्व्यवहार की शिक्षा दी जाये। इसके अलावा, क्रोध, द्वेष, घृणा, जैसे संवेगों का शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसे भी समझाया जाय। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम अनिवार्य रूप से कराया जाय। शुद्ध स्वास्थ्य कर आचार व्यवहार का महत्व बताते हुए तदअनुरूप आदतों का बीजारोपण एवं विकास किया जाय।

peer reviewed

धार्मिक शिक्षा हेतु परमात्मा के साथ मनुष्य के सम्बन्ध को कहानियों के माध्यम से बताया जाये। महान धार्मिक गुरूओं एवं विश्व प्रेम फैलाने वाले व्यक्तियों के चरित्र की बातें बालकों को बतायी जाये। छात्रों को संस्कृत, पाली व अरबी भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान करायाजाये। क्योंकि ये भारतवर्ष की प्राचीन भाषायें हैं। इनके शिक्षण में आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाये। भाषा शिक्षण प्रदान करने हेतु बालकों को सर्वप्रथम उनके आसपास की वस्तुओं का ज्ञान कराकर उनके प्रयोग से सम्बन्धित छोटे–छोटे वाक्य बना कर के जायं तब साधारण वार्तालाप द्वारा अन्य जानकारियों प्रदान की जांय। जब भाषा में वास्तविक रूचि उत्पन्न हो जाये, तभी उन्हें व्याकरण की शिक्षा दी जानी चाहिए। अंग्रेजी भाषा का शिक्षण वार्तालाप व कहानी विधि द्वारा प्रदान किया जाये।

प्राकृतिक अध्ययन में पौधे व जीवन–जन्तुओं को निरीक्षण व प्रयोग विधि द्वारा पढ़ाना उचित रहता है। इतिहास और भूगोल विषयों को पढ़ाने में चित्रों और कहानियों को माध्यम रूप में प्रयुक्त करना सार्थक होता है। भूगोल से सम्बन्धित विषयों को मॉडलों या मानचित्रों द्वारा समझाया जाना चाहिए। गणित विषय के अन्तर्गत सरल जोड़, घटाना एवं गुणा–भाग व भारतीय मुद्रा सम्बन्धी ज्ञान, बॉट, माप के सवाल और साधारण ज्यामिति का ज्ञान देना उपयुक्त होता है।

peer reviewed

(ब) 10 से 14 वर्ष तक का समय

यह उच्च माध्यमिक शिक्षा का स्तर है। इसमें कक्षा पाँच, छः, सात और आठ का शिक्षण कार्य किया जाये। इसके अन्तर्गत छात्रों के बौद्धिक विकास हेतु भाषाओं, इतिहास, भूगोल, प्रकृति अध्ययन, विज्ञान, गणित विषयों का विस्तृत अध्ययन कराया जाये। मातृभाषा का अग्रिम शिक्षण देने के साथ–साथ संस्कृत, पाली या अरबी भाषा का भी ज्ञान जरूरी है। पत्र लेखन व अच्छे आधुनिक लेखकों की कृतियाँ पढ़ने से भी भाषा के ज्ञान में अभिवृद्धि होती है। प्रकृति अध्ययन में मानव के शारीरिक रचना (वायलाजी) सम्बन्धी एवं पेड़–पौधों से सम्बन्धित अध्ययन (वाटनी) कराना चाहिए। भौतिकी भूगोल आदि विषयों के साथ–साथ रसायन एवं भौतिक विज्ञान का भी प्रारम्भिक ज्ञान दिया जाना चाहिए। भारतीय इतिहास और ऐतिहासिक भूगोल (हिस्टारिकल ज्योग्राफी) जिसमें भारतीय आर्थिक, राजनैतिक और औद्योगिक भूगोल का प्रारम्भिक ज्ञान हो, का अध्ययन कराया जायें उच्च गणित, प्रारम्भिक बीजगणित व रेखागणित का भी अध्ययन कराया जाये। धार्मिक शिक्षा देते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाये कि छात्र किस धर्म को मानते हैं। छात्र जिस धर्म को मानते हो उसी धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों के आधार पर उनको धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाये।

तृतीय काल–चौदह से इक्कीस वर्ष

इस स्तर की सम्बन्धित शिक्षा को भी श्रीमती बेसेन्ट द्वारा पूर्व के समान ही दो उप विभागों में विभक्त किया गया है–

(अ) 14 से 16 वर्ष की शिक्षा

श्रीमती बेसेन्ट ने इसे हाईस्कूल की शिक्षा का काल कहा है। इस काल में मानसिक विकास से सम्बन्धित चरमावस्था की ओर तीव्रगति से बढ़ता है। अतः इस काल में बालक का अधिकतम बौद्धिक विकास सम्भव बनाना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। छात्रों को आगे के शैक्षिक जीवन में किस विषय वर्ग की शिक्षा लेनी है इसका चयन इसी अवस्था में करना होता है। जिससे कि वह इन दो वर्षों में भावी शिक्षा विषयों की तैयारी कर सके।

श्रीमती बेसेन्ट के अनुसार शिक्षण पद्धति

श्रीमती बेसेन्ट के अनुसार शिक्षण पद्धति शिक्षा का एक साधन अवश्य है तथापि शिक्षक को इसका दास नहीं बनना चाहिए। उसे छात्रों में निहित मौलिकता का सम्मान करना चाहिए। वास्तव में शिक्षा द्वारा बालक को ऐसी प्रेरणा दी जानी चाहिए जिसके सहारे छात्र अपने जीवन का मार्ग अधिकाधिक प्रशस्त बना सके। जीवन संघर्षों का सफलता पूर्वक सामना कर सके। समाज और राष्ट्र की प्रगति में सहायक हो सके।

peer reviewed

श्रीमती एनी बेसेन्ट के अनुसार, शिक्षा वह पूर्णता है, जिसके द्वारा व्यक्ति निरन्तर ज्ञानरूपी प्रकाश पाता रहता है। शिक्षक द्वारा शिक्षा की प्रणाली को शिक्षा–शास्त्री में दर्शायी गयी शिक्षा पद्धतियों का ही दास नहीं बन जाता चाहिए, अपितु अपनी योग्यता तथा अपने व्यक्तित्व द्वारा छात्र का ऐसा मार्गदर्शन करना चाहिए जिससे शिक्षा काल के बाद भी वह अपने जीवन को सुखमय बनाने में स्वयं सक्षम बन सके।

निष्कर्ष

मनोवैज्ञानिक आधार पर मानव की समस्त योग्यताओं व क्षमताओं को शरीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक श्रेणी में विभाजित किया जाता है। तद्नुकूल इन समस्त क्षमताओं का समन्वित विकास शिक्षा का उद्देश्य बनता है ऐसा श्रीमती एनी बेसेन्ट का विचार था ऐसा ही विचार प्रकारान्तर रूप से भारत में अपनायी जाने वाली 1986 की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा भी प्रतिपादित किया गया है। इसके अतिरिक्त श्रीमती एनी बेसेन्ट ने जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य 'आत्मानुभूति' प्राप्त करने की क्षमता को शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य बताया है। इस दृष्टि से श्रीमती एनी बेसेन्ट ने मनुष्य के आध्यात्मिक विकास को जहाँ शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य माना है वही वर्तमान में ऐसा नहीं माना जाता। चूँकि 'आत्मानुभूति' के लिए आत्म प्रकाशन अनिवार्य है और आत्मप्रकाशन के लिए व्यक्ति को अपनी समस्त शक्तियों व

योग्यताओं की जानकारी प्राप्त करना व उसका समुचित दिशा में विकसित और प्रवाहित करना आवश्यक हो जाता है अतः शिक्षा के अन्य उद्देश्यों के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व संवेगात्मक विकास को भी रेखांकित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1) लक्ष्मी नारायण गुप्ता महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री पृ0 222.
2) चौबे सरयू प्रसाद एवं अखिलेशः भारत और पश्चिम के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, भवदीय प्रकाशन।
3) वर्मा, बैद्यनाथ प्रसादः विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, द्वितीय संस्करण, मीनाक्षी प्रकाशन।
4) सिंह, लक्ष्मण आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक विचार, कालेज बुक डिपों, जयपुर वर्ष 1972.
5) त्रिपाठी प्रो0 ए0के0: प्रज्ञा –एनी बेसेन्ट , स्मुति अंक, 42–46, भाग 1,2 वर्ष 1996–2001.
6) गुप्ता डॉ0 एस0पीः भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998,
7) जोशी, शांतिः समसामयिक भारतीय दर्शनिक, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975.
8) दूबे, रमाकांतः विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, मीनक्षी प्रकाश्न, मेरठ।

peer reviewed